+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

YOJANA MAGAZINE ANALYSIS

(योजना पत्रिका विश्लेषण)

(हमारा पारिस्थितिकी-तंत्र)

(April 2024)

(Part I)

TOPICS TO BE COVERED

- संपादकीय: हमारा पारिस्थितिकी-तंत्र
- भूवैज्ञानिक पारिस्थितिकी तंत्र
- पारंपरिक उपवन

संपादकीय: हमारा पारिस्थितिकी-तंत्र

परिचय:

- भारत में, हिमालय के पर्वतों से लेकर विशाल समुद्री तटों तक, उत्तर-पूर्व के घने हरे जंगलों से लेकर उत्तर-पश्चिम के तपते रेगिस्तानों, विभिन्न प्रकार के जंगलों, दलदलों, द्वीपों और महासागरों तक, प्राकृतिक पारिस्थितिकी-तंत्र की विशाल विविधता है। 80 रामसर आर्द्रभूमि और 40 से अधिक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों, विशाल पठारों, हरे-भरे नदी के मैदानों और कई बड़ी नदियों के साथ, भारत में अविश्वसनीय रूप से बहुमुखी स्थलाकृति है जो यात्रियों को आनंदित करती है।

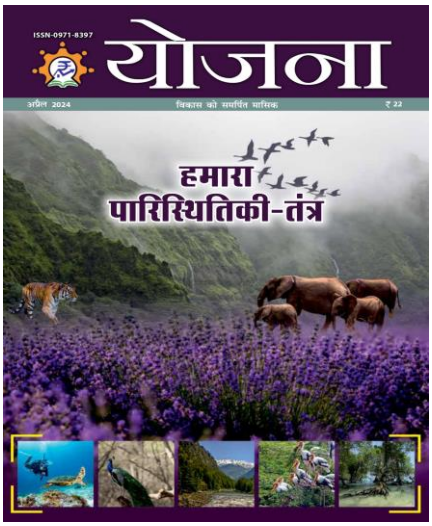

हिमालय पर्वत श्रृंखला:

- हिमालय की ऊंची घाटियों, वनस्पतियों और जीवों की विविध श्रृंखला और ऊंची चोटियां लंबे समय से यात्रियों, साहसी व्यक्तियों और आध्यात्मिक साधकों को आकर्षित करती रही हैं, जो अंततः देश के आध्यात्मिक, कलात्मक और सांस्कृतिक ताने-बाने को प्रभावित करती हैं। माउंट एवरेस्ट, कंचनजंगा, नंगा पर्वत और अन्य सहित दुनिया की कुछ सबसे ऊंची चोटियां हिमालय में पाई जाती हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

थार रेगिस्तान:

- भारत का सबसे बड़ा रेगिस्तान, थार रेगिस्तान उत्तर पश्चिम में स्थित है और अपने शुष्क इलाके तथा रेत के बदलते टीलों से अलग है। इसका निर्माण अरावली पर्वतमाला के वृष्टिछाया प्रभाव के कारण हुआ। अपनी प्रचंड जलवायु के बावजूद, थार रेगिस्तान, रेगिस्तान के अनुकूल भारतीय चिंकारा, कृष्णमृग और रेगिस्तानी लोमड़ी जैसे वन्यजीवों की एक विस्तृत शृंखला का घर है।

सिंधु-गंगा मैदान और मैंग्रोव क्षेत्र:

- हिमालय की तलहटी से लेकर थार रेगिस्तान तक फैला इंडो-गांगेय या सिंधु-गंगा मैदान एक उपजाऊ जलोढ़ मैदान है जो हिमालयी नदियों के तलछट के जमाव से बना है।
- सुंदरबन क्षेत्र का भारतीय भाग गंगा डेल्टा के सबसे निचले बिंदु पर स्थित है। मैंग्रोव वनों वाला यह क्षेत्र वन्य जीवन की विविधता के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें कई पक्षी प्रजातियां, बंगाल टाइगर और भारतीय अजगर और मरीन (खाराजल) मगरमच्छ जैसी अन्य लुप्तप्राय प्रजातियां शामिल हैं।

प्रायद्वीपीय पठार:

- प्रायद्वीपीय पठार, जो भारत के केंद्र से दक्षिण तक फैला है, देश के अधिकांश भूमि क्षेत्र को कवर करता है। यह एक विशाल, उबड़-खाबड़ और ऊंचा क्षेत्र है जो कई प्रमुख नदियों से घिरा हुआ है, जिनमें नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी शामिल हैं, जो सभी हिमालयी नदियों से कहीं अधिक पुरानी हैं।
- पश्चिमी और पूर्वी घाट, जो अपनी असाधारण जैव विविधता और आश्चर्यजनक दृश्यों के लिए प्रसिद्ध हैं, प्रायद्वीपीय पठार की सीमा पर हैं और भारत के पश्चिमी तथा पूर्वी तटों के समानांतर चलते हैं।
- दक्कन का पठार एक बड़ा ऊंचा क्षेत्र है जो मध्य और दक्षिणी भारत के एक बड़े हिस्से तक फैला हुआ है। यह अपने उपजाऊ मैदानों, ज्वालामुखीय संरचनाओं और सपाट शीर्ष वाली पहाड़ियों से अलग है।
- मन्नार की खाड़ी, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह तथा मूंगा चट्टानें स्वयं जैव विविधता के लिए हॉटस्पॉट हैं जो समुद्री कछुओं, रंगीन मछलियों और कोरल पॉलीप्स सहित समुद्री जीवन की एक अविश्वसनीय शृंखला का घर हैं।

पारिस्थितिकी-तंत्र संरक्षण का मानव कल्याण से घनिष्ठ संबंध:

- पारिस्थितिकी-तंत्र संरक्षण और मानव कल्याण आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- प्राकृतिक दुनिया के लिए स्थिरता, संरक्षण और सम्मान के महत्व को कायम रखते हुए पारिस्थितिकी-तंत्र की दीर्घकालिक परिवर्तनशीलता और स्वास्थ्य, भावी पीढ़ियों के लिए सर्वोपरि हैं, जैसे-जैसे हम 21वीं सदी की चुनौतियों से जूझ रहे हैं, हमारे पारिस्थितिक-तंत्र को समझने और उसकी रक्षा करने की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारत का भूवैज्ञानिक पारिस्थितिकी तंत्र:

परिचय:

- भारत के भौगोलिक भू-दृश्य को उत्तर में महान हिमालय द्वारा चिह्नित किया गया है जिसने भारतीय उपमहाद्वीप के अद्वितीय सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

- हिमालय के दक्षिण में, हिमालय में निकलने वाली नदियों द्वारा निर्मित विशाल मैदान बना हुआ है। इसमें से गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी प्रणालियां सबसे अधिक उपजाऊ क्षेत्रों में से एक है और भारत की आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा यहां रहता है।
- भारत का अधिकांश भौगोलिक क्षेत्र प्रायद्वीपीय पठार से आच्छादित है जो देश के मध्य से दक्षिणी भागों तक फैला हुआ है। यह एक बड़ा ऊंचा, ऊबड़-खाबड़ इलाका है जो कई बड़ी नदियों जैसे कि नर्मदा, गोदावरी कृष्णा और कावेरी द्वारा विच्छेदित है, जो हिमालय की नदियों से बहुत पुरानी है।

- प्रायद्वीपीय पठार की सीमा से लगे और भारत के पश्चिमी और पूर्वी तटों के समानांतर चलने वाली पश्चिमी और पूर्वी घाट हैं, जो अपने समृद्ध और अद्वितीय जैव विविधता और सुरम्य परिदृश्य के लिए जाने जाते हैं।
- भारत की लगभग 7,500 कि. मी. लंबी तटरेखा है, जो पश्चिम में अरब सागर, दक्षिण में हिंद महासागर और पूर्व में बंगाल की खाड़ी से लगती है।
- थार रेगिस्तान भारत के उत्तर पश्चिमी भाग में स्थित है जो रेत के टीलों, विरल वनस्पति और विशिष्ट जीवों वाला एक विशाल शुष्क क्षेत्र है।
- भारत में कई द्वीप समूह भी है जिनमें सबसे प्रमुख हैं बंगाल की खाड़ी में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और अरब सागर में लक्षद्वीप द्वीप समूह। इन द्वीपों में समृद्ध समुद्री जैव विविधता है और ये रणनीतिक दृष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

हिमालय पर्वत श्रृंखला:

- हिमालय दुनिया की सबसे ऊंची पर्वत श्रृंखला है, जो भारतीय भूभाग को तिब्बती पठार से अलग करती है। इसका निर्माण भारतीय प्लेट के यूरेशियन प्लेट से टकराने से हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी किनारे पर चलने वाली एक बड़ी वलित पर्वत प्रणाली का निर्माण हुआ है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- यह पश्चिम उत्तर-पश्चिम से पूर्व दक्षिण-पूर्व दिशा तक एक चाप के रूप में लगभग 2,400 कि.मी. तक चलता है जो पांच दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में फैला हुआ है। इसकी चौड़ाई पश्चिम में 350 कि.मी. से लेकर पूर्व में 150 कि.मी. तक है। हिमालयी भूभाग में ऊंची बर्फ से ढकी चोटियों, खड़ी ढलान वाली गहरी घाटियां और ग्लेशियर शामिल है।
- भौगोलिक दृष्टि से हिमालय में चार समानांतर पर्वत श्रृंखलाएं शामिल हैं, अर्थात शिवालिक पहाड़ियाँ, निचली हिमालय श्रृंखला या हिमाचल, महान हिमालय श्रृंखला या हिमाद्रि और दक्षिण से उत्तर तक तिब्बती हिमालय। महान हिमालय दुनिया की कुछ सबसे ऊंची चोटियों का घर है जैसे माउंट एवरेस्ट, कंचनजंगा, नंगा पर्वत आदि।
- हिमालय रेंज के भीतर कई ग्लेशियर मौजूद हैं जिनमें गंगोत्री ग्लेशियर और सतोपंथ ग्लेशियर शामिल है। हिमालय के ग्लेशियर उत्तरी भारत की नदियों के लिए ताजे पानी का स्रोत है, जो देश को बहुसंख्यक आबादी को पानी उपलब्ध कराते हैं।
- यह क्षेत्र भू-तापीय ऊर्जा संसाधनों की संभावना के साथ अभी भी भौगोलिक रूप से सक्रिय है। विभिन्न क्षेत्रों में गर्म पानी के झरनों और भूतापीय विसंगतियों की पहचान की गई है, जो उपसतही ताप स्रोतों की उपस्थिति का संकेत देते हैं जिनका उपयोग बिजली उत्पादन के लिए किया जा सकता है।

उत्तरी मैदानी क्षेत्र:

- उत्तरी मैदानों को 'भारत को महान मैदान' भी कहा जाता है. यह दुनिया के सबसे व्यापक जलोढ़ क्षेत्रों में से एक है। यह पश्चिम से पूर्व तक लगभग 2400 कि.मी. और उत्तर से दक्षिण तक 240 से 320 कि.मी. तक फैला है।
- इसका निर्माण हिमालय के उत्थान से उत्पन्न होने वाली नदियों द्वारा लाए गए तलछटों से हुआ है, और एक अग्रभूमि बेसिन में जमा हुआ है। हालांकि इसकी ऊंचाई कम है और उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण की ओर सामान्य ढलान है, विशाल उत्तरी मैदानों में कुछ विविध भौगोलिक विशेषताएं हैं।
- जैसे-जैसे हिमालय से निकलने वाली नदियां पहाड़ियों से नीचे उतरती हैं, उनका वेग कम हो जाता है और परिणामस्वरूप, वे अपने सघन और मोटे तलछट के अंश को 'भाबर' नामक एक संकीर्ण, छिद्रपूर्ण, पतली पट्टी में तलहटी में बहा देती हैं जो लगभग 8 से 16 कि.मी. चौड़ी होती है। भाबर बेल्ट में सरंध्रता के कारण जलधाराएं भूमिगत हो जाती हैं। 'तराई' बेल्ट भाबर बेल्ट के दक्षिण में स्थित है जहां धाराएं भाबर बेल्ट में भूमिगत होकर फिर से सतह पर आ जाती हैं। यह एक खराब जल निकासी वाला, गीला, दलदली और घने जंगलों वाला संकरा ट्रैक है, जो भाबर के समानांतर लगभग 15-30 कि.मी. तक फैला हुआ है। घने जंगलों वाले

तराई क्षेत्र में विविध वनस्पतियां और जीव-जंतु हैं और यहां उत्तराखंड के जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क और असम में काजीरंगा नेशनल पार्क जैसे कुछ प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यान हैं। उत्तरी मैदानों की एक अन्य भौगोलिक विशेषता 'भांगर' है, जो एक पुराना जलोढ़ है जो बाढ़ के मैदान के ऊपर एक छत बनाता है। यह अक्सर चूनेदार पत्थर जैसे कंकड़ों से ढका रहता है जो 'कांकड़' के नाम से जाना जाता है। नदी के किनारों के साथ बाढ़ के मैदानों का निर्माण 'खादर' द्वारा होता है, जो हर साल पुनः भर जाने वाले नए जलोढ़ से बना होता है।

- उत्तरी मैदान उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी प्रदान करते हैं जो कृषि गतिविधियों में सहायक होती हैं और रेत का उपयोग भवन निर्माण के लिए निर्माण सामग्री के रूप में किया जाता है। मैदानों के रेत भंडार, उत्कृष्ट जलभृत हैं जो पीने और कृषि के लिए पानी उपलब्ध कराते हैं।
- उत्तरी मैदानी इलाकों की नदियां तलछट जमाव से भरी हुई हैं, मुहाने पर उनका तलछट भार दुनिया में सबसे बड़ा डेल्टा बनाता है जिसे 'सुंदरवन' कहा जाता है। यह ज्वारीय जलमार्गों, कीचड़ वाले मैदानों और नमक-सहिष्णु मैंग्रोव बनों के छोटे द्वीपों के एक जटिल नेटवर्क द्वारा चिह्नित है और चल रही पारिस्थितिक प्रक्रियाओं का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

- मैंग्रोव वन उष्णकटिबंधीय चक्रवातों और सुनामी के विरुद्ध प्राकृतिक बाधाएं प्रस्तुत करते हैं। यह क्षेत्र अपने विस्तृत जीव-जंतुओं के लिए जाना जाता है, जिनमें कई पक्षी प्रजातियां, बंगाल टाइगर और अन्य खतरे वाली प्रजातियां जैसे एस्टुरीन मगरमच्छ और भारतीय अजगर शामिल हैं।

प्रायद्वीपीय पठार:

- प्रायद्वीपीय पठार भारतीय भूभाग की सबसे बड़ी भौगोलिक इकाई है। इसमें एक टेबल-लैंड प्रकार की स्थलाकृति है, जो समुद्र तल से लगभग 900-1200 मीटर की ऊंचाई से चिह्नित है, जो कई नदियों द्वारा विच्छेदित है तथा जो व्यापक घाटियों का निर्माण करती है।
- यह अवशिष्ट पहाड़ियों वाला एक ऊबड़-खाबड़ क्षेत्र है, जो लाखों और अरबों साल पहले बनी पर्वत श्रृंखलाओं के अपक्षय से बना है। यह पठार पश्चिम में अरावली पर्वतमाला से लेकर पूर्व में छोटा नागपुर पठार तक फैला हुआ है। इसमें मध्य भारत की महत्वपूर्ण पर्वत श्रृंखलाएं जैसे विंध्य, सतपुड़ा, महादेव, मैकाल और सरगुजा पर्वतमाला के साथ-साथ पश्चिमी और पूर्वी घाट शामिल हैं।
- इसमें मुख्य रूप से आग्नेय और रूपांतरित मूल की कठोर क्रिस्टलीय चट्टानें शामिल हैं। यह खनिज संसाधनों से समृद्ध है जो भारत के आर्थिक विकास के लिए

महत्वपूर्ण है। इसमें लोहा, बॉक्साइट, अभ्रक, सोना, तांबा, मैंगनीज आदि जैसे खनिज भंडार हैं। यह कोलार, हुट्टी, बैलाडीला, सिंहभूम, कोरबा, मलांजखंड आदि जैसी प्रसिद्ध खदानों का घर है।

- गोंडवाना कोयला भंडार का अधिकांश हिस्सा भारत के प्रायद्वीपीय पठार में पाए जाते हैं। इस क्षेत्र में चूना पत्थर का प्रचुर भंडार है जो सीमेंट उद्योग में उपयोग किया जाने वाला एक प्रमुख कच्चा माल है। पठार में विभिन्न अन्य खनिज वस्तुओं जैसे क्रोमाइट, सीसा, जस्ता, जिप्सम आदि के भंडार भी हैं।
- समृद्ध खनिज संसाधनों के अलावा, इस क्षेत्र से पर्याप्त फसल उत्पादन में भी सहयोग मिलता है। पठार का एक बड़ा हिस्सा उपजाऊ काली मिट्टी से ढका हुआ है जो कपास उगाने के लिए बेहद उपयोगी है। प्रायद्वीपीय भारत के कुछ निचले पहाड़ी क्षेत्र चाय, कॉफी, रबर आदि फसलों की खेती के लिए उपयुक्त है। प्रायद्वीपीय भारत की नदियों, जल निकासी द्वारा लाए गए जलोढ़ से निर्मित उपजाऊ तटीय मैदान तटीय क्षेत्रों में कृषि का समर्थन करते हैं।
- तटीय क्षेत्रों की रेत थोरियम युक्त मोनाजाइट से समृद्ध है जो भारत की परमाणु परियोजनाओं को शक्ति प्रदान करने की क्षमता रखती है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

थार रेगिस्तान:

- थार रेगिस्तान, जिसे 'महान भारतीय रेगिस्तान' के रूप में भी जाना जाता है, एक विशाल शुष्क क्षेत्र है, जो मुख्य रूप से भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है। इसमें रेत के टीले, चट्टानी भूभाग, नमक के मैदान और विरल वनस्पति शामिल हैं। रेत के टीले, जिन्हें 'भाखर' के नाम से जाना जाता है, 150 मीटर तक की ऊंचाई तक पहुंच सकते हैं और हवा के साथ लगातार बदलते रहते हैं।
- रेगिस्तान में शुष्क नदी तल भी हैं जिन्हें 'नाला' कहा जाता है, जो कभी-कभी मानसून के मौसम में पानी से भर जाते हैं। अपनी कठोर परिस्थितियों के बावजूद, यह रेगिस्तानी जीवन के लिए अनुकूलित, विशेष पौधों और जानवरों की प्रजातियों के साथ एक अद्वितीय पारिस्थितिकी तंत्र का समर्थन करता है।
- यह क्षेत्र तेल भंडार से समृद्ध है और यह बाड़मेर बेसिन में भारत के सबसे बड़े तटवर्ती तेल क्षेत्रों में से एक का घर है। यह क्षेत्र दुनिया के सबसे बड़े नमक दलदलों में से एक है जिसे 'ग्रेट रन ऑफ कच्छ' कहा जाता है। ग्रेट रन ऑफ कच्छ भारत के प्रमुख नमक उत्पादक जिलों में से एक है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारत का द्वीपीय क्षेत्र:

- भारत कई द्वीपों से घिरा हुआ है, जिनमें से प्रत्येक की अपनी अनूठी भौगोलिक, पारिस्थितिकी और सांस्कृतिक विशेषताएं हैं।
- अंडमान और निकोबार द्वीप समूह एक द्वीपसमूह का निर्माण करता है, जिसमें लगभग 572 द्वीप शामिल हैं, जिनमें से केवल 37 ही बसे हुए हैं। ये द्वीप अपने प्राचीन समुद्र तटों, हरे-भरे उष्णकटिबंधीय जंगलों और विविध समुद्री जीवन के लिए जाने जाते हैं। ये द्वीप श्रृंखलाएं मुख्य रूप से ज्वालामुखीय मूल की हैं, जो प्लेटों की गति के कारण लावा के विस्फोट से बनती हैं। अंडमान सागर में बैरेन द्वीप भारत का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी है।
- भारत के पश्चिमी तट पर द्वीपों का एक अन्य प्रमुख समूह लक्षद्वीप है, जो 36 द्वीपों का एक द्वीपसमूह है। ये मुख्य रूप से अद्वितीय समुद्री वनस्पतियों और जीवों वाले मूंगा द्वीप हैं। अंडमान और निकोबार और लक्षद्वीप द्वीप समूह भारत के पर्यटन स्थल भी हैं, जो भारत में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देते हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

पारंपरिक उपवन:

उपवन क्या होते हैं?

- आमतौर पर उपवन छोटे वन क्षेत्र होते हैं, जिन्हें स्थानीय लोगों द्वारा धार्मिक मान्यताओं, पारंपरिक भावनाओं और वर्ज़नाओं के माध्यम से संरक्षित किया जाता है और ये कई संकटग्रस्त प्रजातियों के भंडार हैं। इन्हें लोकप्रिय रूप से जीवित जैविक विरासत स्थल कहा जाता है क्योंकि इसमें समृद्ध विविधता मौजूद है।
- यह अनुमान लगाया गया है कि भारत में उपवनों की कुल संख्या डेढ़ लाख से अधिक है। हालांकि विभिन्न राज्यों में 14000 से अधिक उपवनों की गणना की गई है।

- ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में उनके अलग-अलग स्थानीय नाम हैं। उदाहरण के लिए सिक्किम में लोकप्रिय रूप से 'गुम्पास' के नाम से जाना जाता है; केरल में को 'कावु'; राजस्थान में 'ओरण'; आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में इन्हे लोकप्रिय रूप से 'पवित्र वनालु/रक्षिता वनालु/देवता वनालु' के नाम से जाना जाता है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

उपवनों के प्रकार:

- **मंदिर उपवन:** यह उपवन अपने धार्मिक महत्व के कारण मंदिरों से जुड़े हुए हैं। आमतौर पर यह सरकार मंदिर ट्रस्ट या ग्रामीण समितियां द्वारा संरक्षित होते हैं।
- **पारंपरिक उपवन:** यह वे स्थान है जहां लोक देवता निवास करते हैं। इनमें अक्सर पौधों और पशु जीवन की समृद्ध विविधता पाई जाती है।
- **धार्मिक उपवन:** ये जहां हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, इस्लाम धर्म और सिख धर्म से जुड़े हुए हैं। परंपरागत रूप से इन्हें औपचारिक सरकारी कानून के बजाय धार्मिक मान्यताओं और रीति रिवाज के माध्यम से स्थानीय समुदायों द्वारा संरक्षित किया जाता है।

उपवनों का महत्व:

- **पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा:** उपवन अक्सर संरक्षित क्षेत्र के रूप में कार्य करते हैं, जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली मानवीय गतिविधियों को प्रतिबंधित करके जैव विविधता की रक्षा करते हैं।
- **पारंपरिक ज्ञान के संरक्षक:** उपवनों का प्रबंध करने वाले स्थानीय समुदायों को अक्सर स्थानीय पारिस्थितिकी की और पीढ़ीयों से चली आ रही पारंपरिक प्रथाओं की गहरी समझ होती है। यह ज्ञान भावी पीढ़ीयों के लिए संरक्षण प्रयासों की जानकारी देने के लिए मूल्यवान हो सकता है।

- **जैव विविधता के संरक्षक:** उपवन पौधों और पशु प्रजातियों की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए आश्रय के रूप में कार्य कर सकते हैं, खासकर उन क्षेत्रों में जहां निवास स्थान का नुकसान एक बड़ा खतरा है।
- **सांस्कृतिक संरक्षक:** उपवन स्थानीय समुदायों की सांस्कृतिक और धार्मिक प्रथाओं के महत्वपूर्ण भंडार हैं। इन्हें अक्सर देवताओं या आत्माओं के निवास स्थान के रूप में देखा जाता है और धार्मिक समारोह और अनुष्ठानों के लिए उपयोग किया जाता है।
- **पर्यावरणीय लाभ:** ये किसी क्षेत्र के पारिस्थितिकी संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन उपवनों में मौजूद पेड़ और अन्य वनस्पतियां मिट्टी के कटाव को रोकने और स्वच्छ वायु प्रदान करने में मदद करती हैं।

उपवनों के समक्ष चुनौतियां:

- **पर्यावास की हानि:** शहरीकरण, बुनियादी ढांचे के विकास और शीर्ष पहाड़ियों में कृषि के विस्तार जैसे विकासात्मक गतिविधियों के कारण कई उपवनों को साफ किया जा रहा है या खंडित किया जा रहा है, जो वहां रहने वाले पौधों और जानवरों को नुकसान पहुंचा सकता है।

- **जलवायु परिवर्तन:** जलवायु परिवर्तन और तापमान में अचानक और आकस्मिक परिवर्तन के कारण वन स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी तंत्र को खतरा है। इससे उनकी पारिस्थितिकी, औषधि टैक्सा सहित पुष्प संरचनाओं को तेजी से क्षरण हो रहा है।
- **आक्रामक विदेशी प्रजातियां:** यह ऐसी परिवर्तित प्रजातियां हैं जो देसी प्रजातियों को नुकसान पहुंचा सकती हैं। अक्सर उन्हें संपूर्ण पारिस्थितिकी-तंत्र के लिए प्रमुख खतरों में से एक माना जाता है।
- **संसाधनों का दोहन:** कुछ मामलों में स्थानीय समुदाय इन उपवनों से बहुत अधिक जलाऊ लकड़ी, औषधि पौधे या अन्य संसाधन एकत्रित करते हैं। इससे पारिस्थितिकी-तंत्र पर दबाव पड़ सकता है और गिरावट आ सकती है।

पारंपरिक उपवनों का प्रबंधन:

- कुछ उपवन स्थानीय समुदायों या जनजातियों के संरक्षण और प्रबंधन में है। कुछ का स्वामित्व और प्रबंधन वंशानुगत ट्रस्टीशिप प्रणाली के माध्यम से ग्राम समुदायों द्वारा किया जाता है। उपवन में वार्षिक अनुष्ठानों के दौरान सभी प्रबंध निर्णय पूरे गांव या सामूहिक रूप से लिए जाते हैं।
- सामुदायिक भागीदारी, सतत प्रथाएं, संगठनों के साथ वैज्ञानिक सहयोग, रीति रिवाज में संतुलन, धार्मिक विश्वास और संरक्षण उपवनों के प्रबंधन के प्रमुख सिद्धांत हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

निष्कर्ष:

- वन्य जीव संरक्षण संशोधन अधिनियम 2002 में सामुदायिक रिजर्व के तहत इन उपवनों को कानूनी रूप से संरक्षित किया गया है, ये सामुदायिक संरक्षण के लिए सबसे अच्छे उदाहरण है और इन-सीटू संरक्षण के लिए अद्वितीय स्रोत भी है, लेकिन आधुनिक युग में उपवनों को गंभीर खतरे का सामना करना पड़ रहा है।
- तेजी से शहरीकरण, सांस्कृतिक स्थानांतरण, मानव जनित दबाव, ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन आदि के कारण उपवनों, उनकी पारिस्थितिकी, पुष्प और जीव जंतुओं की रचना और सामाजिक सांस्कृतिक महत्व का तेजी से क्षरण हो रहा है।
- इसलिए इन-सीटू और एक्स-सीटू दोनों तरह के संरक्षण उपायों को बढ़ावा देने व शुरू करने की तत्काल आवश्यकता है; साथ ही भविष्य की पीढ़ियां के लिए इन उपवनों की रक्षा के लिए कड़े सरकारी कानून और जागरूकता कार्यक्रम जिनमें पारंपरिक ज्ञान, खेती, लोक किस्में और अनुसंधान एवं विकास के लिए प्रोत्साहन आवश्यक है।